सपनों के-से दिन

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2015
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 1.

'सपनों के से दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए।

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों को अच्छा नहीं समझते थे। उनके अनुसार बच्चों को शारीरिक या मानसिक दंड देकर कोई भी अध्यापक छात्रों पर अनुशासन की लगाम नहीं लगा सकता और न ही उनके मन में अपने लिए सम्मान स्थापित कर सकता है। मारने-पीटने या अन्य किसी भी प्रकार से प्रताड़ित करने से छात्रों में अनुशासनहीनता, रोष, तनाव व बदले की भावना ही पनपती है। इसके विपरीत अध्यापक यदि विद्यार्थियों की बातों को सुनकर प्यार से उनकी छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान करके उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भाव जगाए तथा उनमें स्वानुशासन का विकास करें, तो न केवल विद्यार्थियों को सही दिशा देने में कामयाब हो सकते हैं वरन उनके मन में अपने लिए एक सम्माननीय स्थान बनाने में भी सफल हो सकते हैं। एक स्वस्थ समाज की नींव रखकर अपने दायित्व का निर्वाह कर सकते हैं।

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई में रुचि क्यों नहीं थी? पढ़ाई को व्यर्थ समझने में उनके क्या तर्क थे? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक ने बताया कि उस समय अधिकांश अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई में कोई विशेष रुचि नहीं थी क्योंकि ज़्यादातर परिवार आर्थिक दृष्टि से विपन्न थे। वे पढ़ाई पर ज़्यादा खर्च नहीं कर सकते थे। उस समय में कॉपियों, पैंसिलों, होल्डरों और स्याही पर साल भर में एक-दो रुपए खर्च होते थे, लेकिन एक रुपए में एक सेर घी या एक मन गंदम (गेहूँ) आ जाता था इसलिए गरीब घरों के लोग पढ़ाई के स्थान पर बच्चों को अपने साथ काम करवाने लग जाते थे। साथ ही वे लोग यह भी सोचते थे कि स्कूल की पढ़ाई धीमी है और जीवन में किसी काम नहीं आएगी। इस पढ़ाई से तो अच्छा यही होगा कि वे अपने बच्चों को हिसाब-किताब सिखाकर मुनीमगिरी करवाएँ या फिर बच्चे खेती या दुकान में उनका हाथ बँटवाएँ।

Question 3.

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक को स्कूल जाने का उत्साह नहीं होता था, क्यों? फिर भी ऐसी कौन-सी बात थी जिस कारण उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? कारण-सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक गुरदयाल सिंह कहते हैं कि उन्हें और उनके मित्रों को स्कूल जाना कभी अच्छा नहीं लगता था। पहली कच्ची श्रेणी से लेकर चौथी श्रेणी तक केवल कुछ लड़कों को छोड़कर लेखक और उसके साथी रोते-चिल्लाते ही स्कूल जाया करते थे। उनके मन में स्कूल के प्रति एक प्रकार का भय-सा बैठा हुआ था। उन्हें मास्टरों की डाँट-फटकार का भय भी सताता रहता था। स्कूल उन्हें नीरस प्रतीत होता था। इसके बावजूद यही स्कूल उन्हें कुछ विशेष अवसरों पर अच्छा भी लगने लगता था। यह अवसर होता था स्काउटिंग के अभ्यास का। तब पीटी साहब अपना कठोर रूप भूलकर लड़कों के हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते थे। वे इन झंडियों को हवा में लहराने को कहते। हवा में लहराती ये झंडिया बड़ी अच्छी लगती थीं। जब पी०टी० साहब 'शाबाश' कहते, तब वे पी०टी० साहब लड़कों को बड़े अच्छे लगते थे। ऐसे अवसर पर लेखक और उनके साथियों को स्कूल जाना अच्छा लगने लगता था।

Question 4.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर पी०टी० सर की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक गुरदयाल सिंह बताते हैं कि उनके पीटी मास्टर का पूरा नाम प्रीतम चंद था। बच्चे उन्हें पी०टी० मास्टर बुलाते थे। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **सख्त अध्यापक**– पी०टी० मास्टर सख्त अध्यापक थे। वे चौथी श्रेणी के छोटे बच्चों द्वारा फ़ारसी के शब्द रूप याद न किए जाने पर मुर्गा बना देते थे। प्रार्थना कराते समय यदि कोई लड़का अपना सिर भी इधर-उधर हिला लेता था या पाँव से दूसरी पिंडली खुजलाने लगता, तो वह उसकी ओर बाघ की तरह झपट पड़ते और 'खाल खींचने' के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर दिखाते थे।

(*ii*) **अनुशासन प्रिय**– मास्टर प्रीतम चंद अनुशासन प्रिय थे। प्रार्थना करते समय सीधी कतारों में कद के अनुसार खड़े लड़कों को देखकर उनका चेहरा खिल उठता था। छात्रों को स्काउटिंग का अभ्यास करवाते समय उनसे कोई गलती न होने पर वे शाबाशी देते थे।

(*iii*) **कुशल प्रशिक्षक**– मास्टर प्रीतम चंद जी एक कुशल प्रशिक्षक थे। वे छात्रों को स्काउट और गाइड की ट्रेनिंग दिया करते थे। नीली-पीली झंडियों के साथ जब वे स्काउटिंग की परेड करवाते तो छात्रों में एक जोश भर देते थे। ऐसे समय में छात्र स्वयं को एक आम आदमी नहीं, अपितु महत्त्वपूर्ण फ़ौजी जवान समझने लगते थे।

(*iv*) **पक्षियों के प्रति प्रेम रखने वाले**– मास्टर प्रीतम चंद ने दो तोते पाल रखे थे। वे नौकरी से निलंबित होने के पश्चात भी दिन में कई बार भिगोकर रखे बादाम उन्हें खिलाते थे। वे तोतों से मीठी-मीठी बातें करते थे। यह उनके स्वभाव के विरोधाभास को दर्शाता है।

Question 5.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं डालती। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती। अपनी इस बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक श्री गुरदयाल सिंह अपने बचपन की एक घटना की ओर संकेत करते हैं। वे कहते हैं कि बचपन में उनके आधे से अधिक साथी हरियाणा या राजस्थान से व्यापार के लिए आए परिवारों से संबंधित थे। उनके कुछ शब्द सुनकर लेखक व उनके अन्य साथियों को हँसी आ जाती थी। बहुत से शब्द समझ में नहीं आते थे। किंतु जब वे सब मिलकर खेलते थे, तब सभी को एक दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ में आ जाती थी और खेल में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 6.

'सपनों के से दिन' पाठ में पी०टी० साहब द्वारा विद्यार्थियों को अनुशासित करने की युक्तियाँ, वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के अनुसार कहाँ तक उचित हैं? उसमें निहित जीवन-मूल्यों पर अपने तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत कीजिए।

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ के अनुसार विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए उन्हें डराया जाता था। छात्र पी०टी० के अध्यापक से बहुत डरते थे। वे छात्रों को बुरी तरह मारते-पीटते थे उनकी डाँट सुनकर छात्र थर-थर काँपते थे। उनके व्यवहार को दिखाने के लिए पाठ में 'खाल खींचने' जैसे मुहावरे का प्रयोग किया गया है। उस समय की शिक्षा पद्धति में डाँट-फटकार की बहुत अहमियत थी। शिक्षा भय की वस्तु समझी जाती थी। मुर्गा बनाना, थप्पड़ मारना, झिड़कना और डंडे मारना, उस समय ऐसे कठोर दंड थे कि जिनसे बालकों को न केवल शारीरिक कष्ट होता था, बल्कि उन्हें मानसिक यंत्रणा भी दी जाती थी।

इन सबसे हटकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार के दंड का कोई प्रावधान नहीं है। अब छात्रों को मारना या पीटना कानूनी अपराध है। आजकल बच्चों को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक तरीके अपनाए जाते हैं। इन तरीकों से उनके अंदर अनुशासन, आदर-भाव, सहयोग, परस्पर प्रेम, कर्मनिष्ठा आदि गुणों का विकास होता है। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं। जो अपने आप में शिक्षा के क्षेत्र में उठाया गया एक उत्तम कदम है। यूँ भी मारने-पीटने से बच्चों के मन में शिक्षा के प्रति अरुचि ही पैदा होती है। तनाव मुक्त एवं शांत सौहार्दपूर्ण वातावरण में दी गई शिक्षा अधिक जीवनोपयोगी सिद्ध होगी।

Question 7.

आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए क्या तरीके निर्धारित हैं? 'सपनों के से दिन' पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में कहाँ तक उचित लगती हैं? जीवन-मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ के अनुसार विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए उन्हें डराया जाता था। छात्र पी०टी० के अध्यापक से बहुत डरते थे। वे छात्रों को बुरी तरह मारते-पीटते थे उनकी डाँट सुनकर छात्र थर-थर काँपते थे। उनके व्यवहार को दिखाने के लिए पाठ में 'खाल खींचने' जैसे मुहावरे का प्रयोग किया गया है। उस समय की शिक्षा पद्धति में डाँट-फटकार की बहुत अहमियत थी। शिक्षा भय की वस्तु समझी जाती थी। मुर्गा बनाना, थप्पड़ मारना, झिड़कना और डंडे मारना, उस समय ऐसे कठोर दंड थे कि जिनसे बालकों को न केवल शारीरिक कष्ट होता था, बल्कि उन्हें मानसिक यंत्रणा भी दी जाती थी।

इन सबसे हटकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस प्रकार के दंड का कोई प्रावधान नहीं है। अब छात्रों को मारना या पीटना कानूनी अपराध है। आजकल बच्चों को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक तरीके अपनाए जाते हैं। इन तरीकों से उनके अंदर अनुशासन, आदर-भाव, सहयोग, परस्पर प्रेम, कर्मनिष्ठा आदि गुणों का विकास होता है। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं। जो अपने आप में शिक्षा के क्षेत्र में उठाया गया एक उत्तम कदम है। यूँ भी मारने-पीटने से बच्चों के मन में शिक्षा के प्रति अरुचि ही पैदा होती है। तनाव मुक्त एवं शांत सौहार्दपूर्ण वातावरण में दी गई शिक्षा अधिक जीवनोपयोगी सिद्ध होगी।

Question 8.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि बच्चों का खेलकूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अप्रिय क्यों लगता था। पढ़ाई के साथ खेलों का छात्र जीवन में क्या महत्त्व है और इससे किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा मिलती है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

बच्चों का खेलकूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अप्रिय लगता है क्योंकि ऐसा करने से उनका पढ़ाई का समय कम हो जाता है। अभिभावकों को लगता है कि खेल में विशेष रुचि रखने वाले बच्चे परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते। खेलकूद के समय वे आपस में न केवल अभद्र भाषा का प्रयोग करना सीखते हैं, वरन आपस में लड़ाई-झगड़ा करना भी सीखते हैं।

अभिभावकों को अपनी इस विचारधारा को बदलने की आवश्यकता है क्योंकि खेल प्रत्येक उम्र के बच्चों के लिए बहुत ज़रूरी होते हैं। खेल के द्वारा बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा केवल बौद्धिक विकास करती है, जबकि खेल बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक व मानसिक विकास में भी अहम भूमिका निभाते हैं। खेल बच्चों की सोच को विस्तृत तथा विकसित करते हैं। इससे बच्चों में सामूहिक रूप में काम करने की भावना का संचार होता है। बच्चों में प्रतिस्पर्धा तथा प्रतियोगिता हेतु आगे बढ़ने की होड़ पैदा होती है। खेलों में भाग लेने से बच्चों को अपना विद्यालय तथा देश का नाम रोशन करने का सुअवसर प्राप्त होता है। खेलों से बच्चों का मनोरंजन होता है तथा वे अनुशासन सीखते हैं। इससे उनमें धैर्य व सहनशक्ति जैसे गुण बढ़ते हैं। खेलों द्वारा बच्चे असफलता को भी एक अवसर की तरह लेना सीखते हैं।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 9.

'सपनों के से दिन' के पाठ में लेखक को कब लगता था कि वह भी एक फ़ौजी है? कारण सहित लिखिए।

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में जब लेखक स्कूल में नई वरदी, पॉलिश किए शूज़ तथा मोजे आदि पहनकर जाता तथा पी०टी० साहब के संचालन में परेड करते समय स्काउट की झंडियाँ हाथों में लेकर ठक-ठककर अकड़कर चलता, तो उसे लगता था कि वह भी एक फ़ौजी ही है।

Question 10.

पी०टी० अध्यापक कैसे स्वभाव के व्यक्ति थे? विद्यालय के कार्यक्रमों में उनकी कैसी रुचि थी? अपने शब्दों में लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

पी०टी० साहब बहुत ही सख़्त व अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। विद्यालय में वे ज़रा-सी गलती होने पर विद्यार्थियों की चमड़ी उधेड़ देते थे। विद्यालय की प्रार्थना सभा में वे बच्चों को पंक्तिबद्ध खड़ा करते थे और यदि कोई बच्चा थोड़ी-सी भी शरारत करता, तो उसकी खाल खींच लेते थे। स्काउट परेड के आयोजन में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती थी। बच्चों को अपने मार्गदर्शन में कुशलतापूर्वक परेड करवाते थे और परेड के समय बच्चों को 'शाबाशी' भी दे देते थे इसलिए बच्चों को उनकी यही 'शाबाशी' फ़ौज के तमगों-सी लगती थी और कुछ समय के लिए उनके मन में पी०टी० साहब के प्रति आदर का भाव जाग जाता था।

Question 11.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि बच्चों की रुचि पढ़ाई में क्यों नहीं थी? माँ-बाप को उनकी पढ़ाई व्यर्थ क्यों लगती थी?

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर बच्चों की रुचि पढ़ाई-लिखाई में इसलिए नहीं थी क्योंकि विद्यालय में उन्हें बुरी तरह दंडित किया जाता था। ज़रा-सी गलती होने पर उनकी चमड़ी उधेड़ दी जाती थी तथा उन्हें नई कक्षा में जाने पर भी पुरानी पुस्तकें व कॉपियाँ दी जाती थीं, जिनसे आती गंध नई कक्षा की सारी उमंग दूर कर देती थी। माँ-बाप पढ़ाई के प्रति जागरूक नहीं थे और सोचते थे कि वे छह महीने में पंडित घनश्याम दास से बच्चे को दुकान का हिसाब रखने की लिपि सिखवा देंगे, इसी कारण उन्हें बच्चों की पढ़ाई व्यर्थ लगती थी।

Question 12.

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक को स्कूल जाने के नाम से उदासी क्यों आती थी? फिर भी कब और क्यों उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक गुरदयाल सिंह कहते हैं कि उन्हें और उनके मित्रों को स्कूल जाना कभी अच्छा नहीं लगता था। पहली कच्ची श्रेणी से लेकर चौथी श्रेणी तक केवल कुछ लड़कों को छोड़कर लेखक और उसके साथी रोते-चिल्लाते ही स्कूल जाया करते थे। उनके मन में स्कूल के प्रति एक प्रकार का भय-सा बैठा हुआ था। उन्हें मास्टरों की डाँट-फटकार का भय भी सताता रहता था। स्कूल उन्हें नीरस प्रतीत होता था। इसके बावजूद यही स्कूल उन्हें कुछ विशेष अवसरों पर अच्छा भी लगने लगता था। यह अवसर होता था स्काउटिंग के अभ्यास का। तब पीटी साहब अपना कठोर रूप भूलकर लड़कों के हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते थे। वे इन झंडियों को हवा में लहराने को कहते। हवा में लहराती ये झंडिया बड़ी अच्छी लगती थीं। जब पी०टी० साहब 'शाबाश' कहते, तब वे पी०टी० साहब लड़कों को बड़े अच्छे लगते थे। ऐसे अवसर पर लेखक और उनके साथियों को स्कूल जाना अच्छा लगने लगता था।

Question 13.

लेखक अपने छात्र-जीवन में स्कूल से मिले छुट्टियों के काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था? आप इसके लिए कौन-सी योजनाएँ बनाते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

Answer:

लेखक अपने छात्र-जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाता था। दो महीनों की छुट्टियों का अधिकांश समय वह खेलकूद में ही बिताना चाहता था। इसी कारण जब एक महीना बाकी रह जाता तो वह सोचा करता था कि गणित के मास्टर जी द्वारा दिए गए 200 सवालों को रोज़ाना दस सवाल निकालकर बीस दिन में आसानी से पूरा किया जा सकता है और जब दस दिन और निकल जाते तो सोचता कि सवाल तो पंद्रह भी निकाले जा सकते हैं, किंतु ऐसे ही दिन बीत जाते थे और वह काम नहीं कर पाता था। ऐसे समय में वह अपने सहपाठी ओमा के समान बनने की बात सोचा करता था, जो काम करने के बजाय मास्टरों की पिटाई को सस्ता सौदा समझता था।

मैं भी छुट्टियों को केवल काम करते हुए नहीं बिताना चाहता हूँ, किंतु ऐसा भी नहीं है कि सारी छुट्टियाँ मौज-मस्ती में बिता दूँ और स्कूल खुलने पर पूरी जुलाई अध्यापकों व माता-पिता की डाँट सुनता रहूँ। इसके लिए मैं पहले से ही पूरी योजना तैयार कर लेता हूँ तथा बारी-बारी से सभी विषयों का कार्य पूरा कर लेता हूँ। इससे मेरी छुट्टियाँ भी आनंदित हो जाती हैं और स्कूल खुलने पर भी मैं तनावग्रस्त नहीं रहता।

Question 14.

पी०टी० साहब की चारित्रिक विशेषताओं और कमियों का उल्लेख अपने शब्दों में कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में पी०टी० साहब अनुशासनप्रिय, पक्षी प्रेमी, निश्चिंत व बेहद सख़्त अध्यापक के रूप में पाठकों के सामने आते हैं। वे अनुशासनप्रिय थे और चाहते थे कि स्कूल का प्रत्येक बच्चा अनुशासित रहे। वे पक्षियों से बहुत प्रेम करते थे, उन्होंने तोते पाले हुए थे और पूरा दिन वे तोतों को बादाम की गिरियाँ भिगो-भिगोकर खिलाते तथा उनसे बातें करते रहते थे। मुअत्तल होने के बाद भी उनके चेहरे पर ज़रा-सी भी चिंता नहीं दिखाई दी थी। इन सब विशेषताओं के अतिरिक्त उनके चरित्र में बच्चों के प्रति बेहद सख़्ती की भावना रखने की कमी दिखाई देती है। वे ज़रा-सी ग़लती हो जाने पर बच्चों की चमड़ी उधेड़ देते थे तथा कई बार बच्चों को ठुड्डों तथा बैल्ट के बिल्ले से मारा करते थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 15.

मास्टर प्रीतमचंद को स्कूल से निलंबित क्यों कर दिया गया? निलंबन के औचित्य और उस घटना से उभरने वाले जीवन-मूल्यों पर अपने विचार लिखिए।

Answer:

एक दिन मास्टर प्रीतमचंद ने चौथी कक्षा के बच्चों को फ़ारसी का शब्द-रूप याद करने के लिए दिया था। जब अगले दिन बच्चे उस शब्द-रूप को नहीं सुना पाए, तो प्रीतमचंद ने गुस्से में भरकर उन्हें मुर्गा बना दिया और बर्बरतापूर्वक उनकी पिटाई करने लगे, ऐसा करते हुए उन्हें हेडमास्टर शर्मा जी ने देख लिया। उनसे उनकी यह बर्बरता सहन नहीं हुई और उन्होंने उन्हें निलंबित कर दिया।

मेरे विचार में हेडमास्टर शर्मा जी वैसे बहुत अच्छे इंसान थे, किंतु इस घटना में उन्हें मास्टर प्रीतमचंद को निलंबित न करके इस बात का अहसास करवाना चाहिए था कि बच्चों के साथ इतनी क्रूरता बिलकुल भी उचित नहीं है। विद्यार्थियों के प्रति उनके इस क्रूर व्यवहार के लिए यदि पहले से ही उन्हें समझाया जाता या चेतावनी दी जाती, तो संभवतः वे ऐसा नहीं करते। ऐसा करने से हेडमास्टर शर्मा जी के क्षमाशीलता, सहानुभूति, उदारता जैसे जीवन मूल्यों का पता चलता और हो सकता है कि उनकी चेतावनी से ही मास्टर प्रीतमचंद सुधर जाते तथा उन्हें अपना सच्चा मार्गदर्शक मानने लगते।

Question 16.

मास्टर प्रीतमचंद का विद्यार्थियों को अनुशासित रखने के लिए जो तरीका था, वह आज की शिक्षा-व्यवस्था के जीवन-मूल्यों के अनुसार उचित है या अनुचित? तर्कसहित स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

मास्टर प्रीतमचंद का विद्यार्थियों को अनुशासित रखने के लिए बुरी तरह शारीरिक दंड देने का तरीका था, यह तरीका आज की शिक्षा-व्यवस्था के जीवन-मूल्यों के अनुसार बिल्कुल भी उचित नहीं है। इससे पुराने ज़माने के समान आज के बच्चों के मन में भी स्कूल के प्रति भय तथा पढ़ाई के प्रति अरुचि का भाव आ सकता है। आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासन जैसा जीवन-मूल्य सिखाने के लिए मनोवैज्ञानिक युक्तियों को अपनाने की व्यवस्था है। आज अध्यापक बच्चों को प्यार-दुलार के सहारे ही अनुशासित बनाने का प्रयास करते हैं।

Question 17.

बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं। आप भी अब तक के अपने स्कूली जीवन की घटनाओं में से ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जो आपके जीवन को नैतिक मूल्यों के प्रति मोड़ने में प्रेरक सिद्ध हुई है।

Answer:

बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं। एक बार की बात है कि अपनी लापरवाही से मेरा हिंदी विषय का बहुत सारा काम अपूर्ण रह गया। अगले दिन उत्तरपुस्तिकाएँ जमा करनी थीं। अध्यापक जी ने यह चेतावनी भी दे दी थी कि कल तक जिसका भी कार्य अपूर्ण रह गया, उसे प्रधानाचार्य जी के कक्ष में जाना पड़ेगा। वास्तव में, यह चेतावनी मेरे लिए चिंता की बात थी क्योंकि प्रधानाचार्य कक्ष में जाने का अर्थ मैं ही नहीं मेरा हर सहपाठी अच्छी तरह जानता था। इस कारण मम्मी को मैंने अपना काम पूरा करने के लिए राज़ी कर लिया, मेरी लिखावट और मम्मी की लिखावट में ज़रा-सा भी अंतर नहीं था। मम्मी ने देर रात तक मेरी उत्तरपुस्तिका पूरी कर दी तथा कवर चढ़ाकर उसे साफ़-सुथरा रूप दे दिया। अगले दिन स्कूल पहुँचकर हिंदी कालांश में मैंने वह उत्तरपुस्तिका जमा कर दी। अगले दिन जब हिंदी अध्यापक कक्षा में आए, तो उन्होंने मेरे कार्य की प्रशंसा करनी शुरू कर दी। वे कॉपी पर मुख्य अध्यापक जी की स्टैंप भी लगवाकर लाए थे। उनकी प्रशंसा सुनकर मुझे आत्मग्लानि हुई और मैंने निर्णय लिया कि मुझे अध्यापक जी को सब कुछ सच-सच बता देना चाहिए। मैं साहस जुटाकर अध्यापक जी के पास गया और मम्मी से कार्य पूर्ण करवाने की बात बता दी। मेरा अनुमान था कि इसके लिए अध्यापक जी मुझे दंडित करेंगे, किंतु उन्होंने ऐसा न करके मेरी पीठ थपथपाई और कहा कि अब एक और प्रशंसा तुम्हारी ईमानदारी के लिए होनी चाहिए। आप विश्वास कीजिए कि उनकी यह बात सुनकर मैं उनके चरणों में झुक गया और मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि अपना सभी कार्य स्वयं पूर्ण करूँगा और संपूर्ण जीवन ईमानदारी जैसे जीवन-मूल्य को अपने मन में बसाए रहूँगा।

Question 18.

बच्चों का खेलकूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अरुचिकर क्यों लगता था? इस विषय में पढ़ाई के साथ खेलों का भी छात्र-जीवन में पढ़ाई जितना ही महत्त्व है। मानसिक और शारीरिक स्वस्थता के लिए खेलों का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए 'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

पहले ज़माने में अभिभावकों की धारणा थी कि 'खेलेंगे-कूदेंगे होंगे ख़राब, पढ़ेंगे-लिखेंगे बनेंगे नवाब।' वे सोचते थे कि खेलकूद में भाग लेकर बच्चा समय गँवा रहा है। वे जीवन की सफलता में केवल और केवल पढ़ाई का ही योगदान मानते थे। यही कारण था कि उस समय बच्चों का खेलकूद में रुचि लेना उन्हें अरुचिकर लगता था। मेरे विचार में पहले ज़माने के अभिभावकों की खेलकूद के प्रति दुर्भावना उचित नहीं थी क्योंकि विद्यार्थी जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी बहुत महत्त्व है। खेलकूद में भाग लेने से बच्चे का मानसिक एवं शारीरिक विकास तेज़ी के साथ होता है और पढ़ाई के कारण महसूस होने वाली मानसिक थकावट दूर हो जाती है तथा स्वास्थ्य अच्छा रहने से पढ़ाई में भी मन लगता है।

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 19.

'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर लिखिए कि पी०टी० साहब की 'शाबाश' बच्चों को फौज़ के तमगों-सी क्यों लगती थी?

Answer:

पी०टी० साहब की शाबाश बच्चों को फ़ौज के तमगों-सी इसलिए लगती थी क्योंकि बच्चे इसे अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि मानते थे। वस्तुतः पी०टी० साहब बड़े क्रोधी स्वभाव के थे और थोड़ी सी ग़लती पर भी वे चमड़ी उधेड़ने की कहावत को सच करके दिखा देते थे। ऐसे कठोर स्वभाव वाले पी०टी० साहब जब बच्चों को शाबाश कहते थे, तो बच्चों को ऐसा लगता था मानो उन्होंने फ़ौज के सारे लोग तमगे जीत लिए हों।

Question 20.

'सपनों के से दिन' पाठ के लेखक का मन पुरानी किताबों से क्यों उदास हो जाता है?

Answer:

लेखक का मन पुरानी किताबों से इसलिए उदास हो जाता है क्योंकि लेखक को पुरानी किताबों से आती विशेष गंध उसे परेशान करती थी। आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर होने के कारण लेखक नई किताब नहीं खरीद पाता था। अन्य विद्यार्थियों की तरह लेखक में भी नई किताबों से पढ़ने की उमंग और उत्साह होता था, परंतु पुरानी किताबों को देखकर वह उदास हो जाता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 21.

ख़ुशी से जाने की जगह न होने पर भी, लेखक को कब और क्यों स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

लेखक खुशी से स्कूल जाना नहीं चाहता था। लेखक के लिए वह खुशी से जाने वाला स्थान नहीं था क्योंकि शिक्षकों की डाँट-फटकार और पिटाई के कारण लेखक के मन में एक भय सा बैठ गया था इसके बावजूद जब उनके पी०टी० सर स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे, विद्यार्थियों को पढ़ाने-लिखने के बदले उनके हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते थे और विद्यार्थियों से परेड करवाते थे। पी०टी० साहब के संचालन में विद्यार्थी लेफ़्ट-राइट परेड करते हुए अपने आपको किसी फ़ौजी से कम नहीं समझते। इस दौरान लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगता था।

Question 22.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति बच्चों की क्या धारणा बन जाती है?

Answer:

यह सत्य है कि मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति बच्चों के मन में एक भय बैठ जाता है। बच्चों के मन में विद्यालय के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है और पढ़ाई छोड़ देने की भावना भी पनपने लगती है। उनके मन में शिक्षक के प्रति घृणा का भाव भी उत्पन्न होने लगता है।

Question 23.

छात्र-जीवन में छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए लेखक क्या योजनाएँ बनाता और उसे पूरा नहीं करने पर कैसे बहादुर बनने की सोचता? 'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर लिखिए।

Answer:

लेखक छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए कई प्रकार की योजनाएँ तो बनाता था, परंतु छुट्टियों में काम पूरा नहीं कर पाता था। विद्यालय से मिले काम के अनुसार वह समय-सारणी भी बनाता था, परंतु उस काम को पूरा नहीं कर पाने की स्थिति में अपने मित्र 'ओमा' की तरह बहादुर बनने की कल्पना करता था। ओमा काम करने की अपेक्षा शिक्षकों द्वारा की गई पिटाई को सस्ता सौदा समझता था। उदाहरण के तौर पर गणित में मिले 200 सवालों को पूरा करने के लिए लेखक दस सवाल प्रतिदिन करने की योजना बनाता था और काम नहीं कर पाने के कारण दिन कम पड़ जाते थे। इसी प्रकार दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस सवाल करने की योजनाएँ बनाई जाती थीं, परंतु छुट्टियाँ समाप्त होने के बाद लेखक स्वयं को 'ओमा' की तरह बनने की कल्पना करने लगता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 24.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लेखक के सहपाठी 'ओमा' की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Answer:

ओमा लेखक के बचपन का मित्र था। वे दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। ओमा बहुत शरारती छात्र था। वह दूसरे विद्यार्थियों को मारता-पीटता था और वह गंदी-गंदी गालियाँ भी दिया करता था। वह अत्यंत अनुशासनहीन छात्र था। वह बहुत ताकतवर भी था। वह चंचल स्वभाव का बालक था, जिसे पढ़ना-लिखना अच्छा नहीं लगता था। कक्षा में शिक्षक द्वारा दिए गए काम को ओमा कभी पूरा नहीं कर पाता था। शिक्षक के द्वारा पिटाई खाने को वह आसान समझता था। उनकी पिटाई का उस पर कोई असर नहीं पड़ता था क्योंकि उसका शरीर बहुत मज़बूत था, उसका 'सिर' भी बहुत बड़ा था। वह लड़ाई में 'सिर' से ही वार करता था इसलिए बच्चे 'ओमा' को 'रेल-बंबा' कहकर पुकारते थे।

Question 25.

'सपनो के से दिन' पाठ के लेखक गुरुदयाल सिंह एवं उनके साथियों को पीटी साहब की 'शाबाश' फ़ौज के तमग़ों-जैसी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

पी०टी० साहब की शाबाश बच्चों को फ़ौज की तमगों-सी इसलिए लगती थी कि बच्चे इसे अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि मानते थे। वस्तुतः पी०टी० साहब बड़े क्रोधी स्वभाव के थे और थोड़ी-सी गलती पर भी वे चमड़ी उधेड़ने की कहावत को सच करके दिखा देते थे। ऐसे कठोर स्वभाव वाले पी०टी० साहब जब बच्चों को शाबाश कहते थे तो बच्चों को ऐसा लगता था मानो उन्होंने फ़ौज के सारे तमगे जीत लिए हों।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 26.

'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर लिखिए कि स्काउट परेड करते समय लेखक स्वयं को 'महत्त्वपूर्ण आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझता था?

Answer:

परेड करना बच्चों को बहुत अच्छा लगता था। मास्टर प्रीतमचंद लेखक जैसे स्काउटों को परेड करवाते थे तो इन बच्चों को बहुत अच्छा लगता था। जब प्रीतमचंद सीटी बजाते हुए बच्चों को मार्च करवाते थे, राइट टर्न, लेफ़्ट टर्न या अबाउट टर्न कहते थे। तब बच्चे छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ करते हुए ठक-ठककर अकड़कर चलते थे, तो उन्हें ऐसा लगता था मानो वे विद्यार्थी नहीं, बल्कि फ़ौजी जवान हों। धुली वर्दी, पॉलिश किए बूट और जुर्राबों को पहनकर बच्चे फ़ौजी जैसा महसूस करते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 27.

फ़ारसी की घंटी बजते ही बच्चे डर से क्यों काँप उठते थे? 'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

चौथी श्रेणी में मास्टर प्रीतमचंद बच्चों को फ़ारसी पढ़ाते थे। वे स्वभाव से काफ़ी सख़्त थे। अगर बच्चे उनकी आशाओं पर पूरे नहीं उतरते थे, तो वे बच्चों को कड़ी सज़ा देते थे। बच्चों के मन में जो उनका भय समाया हुआ था उसके कारण फ़ारसी की घंटी बजते ही बच्चे काँप उठते थे।

फ़ारसी की घंटी बजते ही बच्चे डर से इसलिए काँप उठते थे क्योंकि मास्टर प्रीतमचंद ने फ़ारसी का शब्द-रूप याद करके न लाने पर उनकी बुरी तरह पिटाई की थी, जबकि यह देखकर हेडमास्टर शर्मा जी ने उन्हें मुअत्तल भी कर दिया था, फिर भी बच्चों के मन में डर होने के कारण वे सोचते थे कि मुअत्तल होने के बावजूद कहीं मास्टर प्रीतमचंद उन्हें पढ़ाने के लिए न आ जाएँ। उनका यह डर तब समाप्त होता था जब मास्टर नौहरिया राम जी या फिर हेडमास्टर जी कक्षा में आ जाते थे।

Question 28.

'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर लिखिए कि लेखक को स्कूल जाने और नई कक्षा में पढ़ने की कोई ख़ुशी क्यों नहीं होती थी? उन्हें कब और क्यों स्कूल जाना अच्छा लगता था?

Answer:

लेखक ख़ुशी से स्कूल जाना नहीं चाहता था। लेखक के लिए वह ख़ुशी से जाने वाला स्थान नहीं था क्योंकि शिक्षकों की डाँट-फटकार और पिटाई के कारण लेखक के मन में एक भय सा बैठ गया था इसके बावजूद जब उनके पी०टी० सर स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे, विद्यार्थियों को पढ़ाने-लिखने के बदले उनके हाथों में नीली-पीली झंडियाँ पकड़ा देते थे और विद्यार्थियों से परेड करवाते थे। पी०टी० साहब के संचालन में विद्यार्थी लेफ़्ट-राइट परेड करते हुए अपने आपको किसी फ़ौजी से कम नहीं समझते। इस दौरान लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगता था।

Question 29.

'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर मास्टर प्रीतमचंद के व्यवहार की उन बातों का उल्लेख कीजिए, जिनके कारण विद्यार्थी उनसे नफ़रत करते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

पी०टी० साहब की शाबाश बच्चों को फ़ौज की तमगों सी इसलिए लगती थी कि बच्चे इसे अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि मानते थे। वस्तुतः पी०टी० साहब बड़े क्रोधी स्वभाव के थे और थोड़ी-सी गलती पर भी वे चमड़ी उधेड़ने की कहावत को सच करके दिखा देते थे। ऐसे कठोर स्वभाव वाले पी०टी० साहब जब बच्चों को शाबाश कहते थे, तो बच्चों को ऐसा लगता था मानो उन्होंने किसी फ़ौज के सारे तमगे जीत लिए हैं।

Question 30.

. 'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर लिखिए कि उन दिनों माँ-बाप बच्चों को स्कूल भेजने में रुचि क्यों नहीं लेते थे।

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक ने बताया कि उस समय अधिकांश अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई में कोई विशेष रुचि नहीं थी क्योंकि ज़्यादातर परिवार आर्थिक दृष्टि से विपन्न थे। वे पढ़ाई पर ज़्यादा खर्च नहीं कर सकते थे। उस समय में कॉपियों, पैंसिलों, होल्डरों और स्याही पर साल भर में एक-दो रुपए खर्च होते थे, लेकिन एक रुपए में एक सेर घी या एक मन गंदम (गेहूँ) आ जाता था इसलिए गरीब घरों के लोग पढ़ाई के स्थान पर बच्चों को अपने साथ काम करवाने लग जाते थे। साथ ही वे लोग यह भी सोचते थे कि स्कूल की पढ़ाई धीमी है और जीवन में किसी काम नहीं आएगी। इस पढ़ाई से तो अच्छा यही होगा कि वे अपने बच्चों को हिसाब-किताब सिखाकर मुनीमगिरी करवाएँ या फिर बच्चे खेती या दुकान में उनका हाथ बँटवाएँ।

Question 31.

'सपनों के से दिन' कहानी के आधार पर लिखिए कि छुट्टियों में लेखक कहाँ जाया करता था और वहाँ उसकी दिनचर्या क्या रहती थी।

Answer:

अपने स्कूल की छुट्टियों में लेखक अपनी नानी के घर जाया करता था। लेखक की नानी उसे बहुत प्यार करती थी। वह ननिहाल के छोटे से तालाब में जाकर दोपहर तक नहाया करता था। नानी के घर दूध, मक्खन, घी खूब खाने को मिलता था। वहाँ दिन भर खेलना, खाना और नहाने के सिवा और कोई काम न होता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 32.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक छात्र-जीवन में छुट्टियों के लिए मिले काम को कैसे पूरा करता था।

Answer:

लेखक छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए कई प्रकार की योजनाएँ तो बनाता था, परंतु छुट्टियों में काम पूरा नहीं कर पाता था। विद्यालय से मिले काम के अनुसार वह समय-सारणी भी बनाता था, परंतु उस काम को पूरा नहीं कर पाने की स्थिति में अपने मित्र 'ओमा', की तरह बहादुर बनने की कल्पना करता था। ओमा काम करने की अपेक्षा शिक्षकों द्वारा की गई पिटाई को सस्ता सौदा समझता था। उदाहरण के तौर पर गणित में मिले 200 सवालों को पूरा करने के लिए लेखक दस सवाल प्रतिदिन करने की योजना बनाता था और काम नहीं कर पाने के कारण दिन कम पड़ जाते थे। इसी प्रकार दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस सवाल करने की योजनाएँ बनती थीं, परंतु छुट्टियाँ समाप्त होने के बाद लेखक स्वयं को 'ओमा' की तरह बनने की कल्पना करने लगता था।

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 33.

'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर पी०टी० सर की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'सपनों के से दिन' पाठ में लेखक गुरदयाल सिंह बताते हैं कि उनके पीटी मास्टर का पूरा नाम प्रीतम चंद था। बच्चे उन्हें पी०टी० मास्टर बुलाते थे। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **सख्त अध्यापक**– पी०टी० मास्टर सख्त अध्यापक थे। वे चौथी श्रेणी के छोटे बच्चों द्वारा फ़ारसी के शब्द रूप याद न किए जाने पर मुर्गा बना देते थे। प्रार्थना कराते समय यदि कोई लड़का अपना सिर भी इधर-उधर हिला लेता था या पाँव से दूसरी पिंडली खुजलाने लगता, तो वह उसकी ओर बाघ की तरह झपट पड़ते और 'खाल खींचने' के मुहावरे को प्रत्यक्ष कर दिखाते थे।

(*ii*) **अनुशासन प्रिय**– मास्टर प्रीतम चंद अनुशासन प्रिय थे। प्रार्थना करते समय सीधी कतारों में कद के अनुसार खड़े लड़कों को देखकर उनका चेहरा खिल उठता था। छात्रों को स्काउटिंग का अभ्यास करवाते समय उनसे कोई गलती न होने पर वे शाबाशी देते थे।

(*iii*) **कुशल प्रशिक्षक**– मास्टर प्रीतम चंद जी एक कुशल प्रशिक्षक थे। वे छात्रों को स्काउट और गाइड की ट्रेनिंग दिया करते थे। नीली-पीली झंडियों के साथ जब वे स्काउटिंग की परेड करवाते तो छात्रों में एक जोश भर देते थे। ऐसे समय में छात्र स्वयं को एक आम आदमी नहीं, अपितु महत्त्वपूर्ण फ़ौजी जवान समझने लगते थे।

(*iv*) **पक्षियों के प्रति प्रेम रखने वाले**– मास्टर प्रीतम चंद ने दो तोते पाल रखे थे। वे नौकरी से निलंबित होने के पश्चात भी दिन में कई बार भिगोकर रखे बादाम उन्हें खिलाते थे। वे तोतों से मीठी-मीठी बातें करते थे। यह उनके स्वभाव के विरोधाभास को दर्शाता है।

Question 34.

छात्रों के नेता ओमा के सिर की क्या विशेषता थी? 'सपनों के से दिन' के आधार पर बताइए।

Answer:

ओमा लेखक के बचपन का मित्र था। वे दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। ओमा बहुत शरारती छात्र था। वह दूसरे विद्यार्थियों को मारता-पीटता था और वह गंदी-गंदी गालियाँ भी दिया करता था। वह अत्यंत अनुशासनहीन छात्र था। वह बहुत ताकतवर भी था। वह चंचल स्वभाव का बालक था, जिसे पढ़ना-लिखना अच्छा नहीं लगता था। कक्षा में शिक्षक द्वारा दिए गए काम को ओमा कभी पूरा नहीं कर पाता था। शिक्षक के द्वारा पिटाई खाने को वह आसान समझता था। उनकी पिटाई का उस पर कोई असर नहीं पड़ता था क्योंकि उसका शरीर बहुत मज़बूत था, उसका 'सिर' भी बहुत बड़ा था। वह लड़ाई में 'सिर' से ही वार करता था इसलिए बच्चे 'ओमा' को 'रेल-बंबा' कहकर पुकारते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 35.

हेडमास्टर शर्मा जी का छात्रों के साथ कैसा व्यवहार था?

Answer:

हेडमास्टर शर्मा जी अनुशासन प्रिय परंतु विनम्र व्यक्ति थे। वे बच्चों को मारने-पीटने में विश्वास नहीं रखते थे। वे बहुत प्रेम से छात्रों को पढ़ाते थे और नाराज़गी भी आँखों से ही प्रकट करते थे। बहुत गुस्सा होने पर गाल पर हल्की-सी चपत लगाकर बच्चों को सुधार देते थे। वे क्रूरता से कोसों दूर थे और इसी कारण मास्टर प्रीतमचंद की बर्बरता वे सहन नहीं कर सके और उन्होंने तुरंत-प्रभाव से विद्यालय से निकलवा दिया। वे एक अच्छे प्रशासक, गुरु तथा उदारमना थे।

Question 36.

ग़रीब घरों के लड़कों का स्कूल जाना क्यों कठिन था? 'सपनों के से दिन' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

ग़रीब घरों के लड़कों का स्कूल जाना इसलिए कठिन था क्योंकि एक तो निर्धनता ही सबसे बड़ी बाधा थी। शुल्क, गणवेश आदि खरीदने के लिए ऐसे परिवार पैसे व्यय नहीं करते थे। दूसरे बच्चों को ही पढ़ाई में रुचि नहीं थी और न ही परिवार वाले पढ़ाई की अनिवार्यता मानते और समझते थे। बच्चों के थोड़ा बड़ा होने पर उन्हें किसी पारिवारिक व्यवसाय, कहीं हिसाब-किताब लिखने आदि में झोंक दिया जाता था।

Question 37.

तोतों के प्रति प्रीतमचंद के मधुर व्यवहार से उनके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता के बारे में पता चलता है?

Answer:

बालकों के प्रति अत्यंत कठोर हृदय रखने वाले मास्टर प्रीतमचंद अपने पालतू तोतों के प्रति मधुर व्यवहार रखते थे। इससे उनके व्यवहार में छिपी हुई ममता का तो आभास होता ही है साथ ही ऐसा भी प्रतीत होता है कि मानो वे किसी पूर्वाग्रह से पीड़ित थे। वे उदार; सहानुभूतिपूर्ण मीठे शब्दों का प्रयोग करते थे, लेकिन केवल अपने पालतू तोतों के लिए, स्कूल के बच्चे उनकी सहानुभूति का पात्र न बन सके।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 38.

मास्टर प्रीतमचंद से डरने और नफ़रत करने के चार कारणों पर प्रकाश डालिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

मास्टर प्रीतमचंद से अधिकतर बच्चे डरते थे और कहीं-न-कहीं उनके मन में पी०टी० सर के लिए घृणा की भावना भी थी। उसके बहुत सारे कारण थे। मास्टर प्रीतमचंद का स्वभाव अत्यंत कठोर था। अनुशासन स्थापित करने के नाम पर वे अत्यंत क्रूर हो जाते थे। बच्चों को शारीरिक दंड देना उनके लिए साधारण बात थी। यदि कोई बच्चा हलका-सा हिल भी जाए तो मास्टर जी 'चमड़ी उधेड़ देना' वाला मुहावरा सही सिद्ध कर देते थे। पढ़ाते समय भी उनमें सहनशीलता का सर्वथा अभाव रहता था। पाठ याद न कर पाने की स्थिति में प्रायः छात्र उनकी क्रूरता के शिकार बन जाते थे। बच्चों के मन में उनके प्रति भय बैठ गया था। छोटे बच्चे तो उनकी कठोरता को झेल ही नहीं पाते थे। वे बच्चों को यमराज जैसे लगते थे। उनके इसी क्रूरतापूर्ण व्यवहार के कारण हेडमास्टर साहब ने उन्हें नौकरी से भी निकलवा दिया था। उनकी यह स्वभावगत त्रुटि थी कि वे न तो अपनी गलती को मानते थे और न ही उसके लिए क्षमा माँगने जाते थे। बच्चों के प्रति स्नेह और प्रेम का उनमें सर्वथा अभाव था। उनकी शाबाशी भी बस पी०टी० परेड के समय ही मिल पाती थी, अन्यथा वे छात्रों को प्रोत्साहित नहीं करते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in